भारतीय संगीत में बनारस के विद्वावानों का योगदान

प्राप्तिः 04.08.2025
स्वीकृतः 13.09.2025

67

दीपक कुमार
शोधकर्ता
श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड

डॉ0 अनुजा रोहिला
शोध निर्देशक
श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड

डॉ0 संतोष नामदेव
सह–सलाहकार
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड

सारांश

भगवान् शिव की इस पौराणिक नगरी में समय–समय पर इतने महान विद्वानों ने जन्म लिया है कि उनके बारे में कुछ लिख पाना, साक्षात् सूरज को प्रकाश देने के समान है। और यह ज्ञान का प्रकाश आगे भी इसी तरह से अपने रस का पान अपनी समृद्ध संस्कृति, और परम्परा के साथ विश्व को कराता रहेगा।

आज बनारस उन सभी विद्वानों का ऋणी हैं, जिनका नाम हम नहीं जानते हैं, परन्तु उन्होंने अपने योगदान से बनारसी संगीत को सर्वोत्तम स्थान प्रदान कर अपनी अमिट भूमिका प्रदान की। हम सभी उन सभी विद्वानों को कोटि–कोटि वंदन करते हैं।

मुख्य बिंदु

बनारस घाट, संगीत, घराना, तबला, सितार, शहनाई, सारंगी, कत्थक, ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, कजरी, चैती।

प्रस्तावना

उत्तरवाहिनी, मोक्षदायिनी देवी मां गंगा के तट पर बसा काशी नगर जिसे बनारस, वाराणसी, धर्मक्षेत्र भी कहते हैं। बाबा विश्वनाथ के त्रिशूल पर विराजमान इस अतिप्राचीनतम नगर का इतिहास ना जाने कब से है। गोस्वामी तुलसी दास, संत कबीर दास और हज़ारों विद्धवानों की इस तपोभूमि में आकर चित्त को जो अपूर्व शांति प्राप्त होती है, वो शायद किसी और जगह नहीं मिलती है। काशी अथवा बनारस केवल एक नगर, क्षेत्र या भूमि का हिस्सा नहीं अपितु सारे भारतवर्ष और ब्रमांड की संस्कृति का प्रमुख केंद्र है। विश्व के प्राचीनतम शहरों में से एक काशी का इतिहास लगभग 5000वर्ष पुराना है और उतनी ही पुरानी है यहां की संस्कृति। काशी को शिव नगरी, आनंदवन या आनन्द कानन, शिवपुरी, श्रीनगरी, शिव राजधानी, और काशी नगरी अथवा कासी आदि नामों से भी जाना जाता है। वेद, पुराण, रामायण, महाभारत से लेकर जैन और बौद्ध साहित्य में भी इस नगर की प्रमाणिकता, पवित्रता, और महानता का

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.67

उल्लेख पाया जाता है। ऋग्वेद में इस पौराणिक नगर को काशी या कासी भी कहा गया है, और जिसका अर्थ होता है प्रकाशित होना या चमकता हुआ शहर। काशी केवल अपने मंदिरों ही नहीं वरन अपने घाटों के लिए भी विश्वप्रसिद्ध है। यहां के प्रसिद्ध 84घाटों में से पाँच प्रमुख घाट, अस्सी घाट, दशाश्मेध घाट, पचगंगा घाट, तुलसीदास घाट तथा मणिकर्णिका घाट है। जिस तरह से प्राचीन वेदों, पुराणों में काशी का महत्त्व बताया गया है, वैसा किसी और शहर या क्षेत्र के बारे में नहीं बताया गया है, इसलिए काशी को भारतवर्ष की सांस्कृतिक राजधानी भी कहा गया है। काशी का महत्त्व बौद्ध धर्म में भी है, जहां भगवान बुद्ध ने अपना पहला धर्म उपदेश सारनाथ में दिया जो बनारस से मात्र 10 से 15 किलोमीटर दूर है। जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में से 20वें तीर्थंकर का जन्म भी यह माना जाता है। इसलिए यह भूमि जैन धर्म के लिए भी पवित्र है।

लेख

जैसे काशी/बनारस/वाराणसी अपने पौराणिक संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है, उसी तरह से यह नगर अपनी विशेष संगीत शैली के लिए भी पुरे विश्वभर में अतिप्रसिद्ध है। भारतवर्ष की पौराणिक और पावन नगरी बनारस का जितना महत्त्व धर्म और ज्ञान से है, उतना ही महत्त्व वहां के विवधतापूर्ण, ऐतिहासिक, और संस्कृति से जुड़े औज़पूर्ण संगीत का है। समय–समय पर बनारस की पावन धरा पर जिन महापुरुषों ने जन्म लिया है, उन्होंने संसार को एक नई ऊर्जा और ज्ञान की अपूर्व अनुभूति प्रदान की है। उन्होंने दुनिया को धर्म, कला, दर्शन, साहित्य और शिल्प की उत्तम प्रेरणा दी है। उनके पांडित्य ने संसार का जो मार्गदर्शन किया है उसका उल्लेख करना असंभ है। आदि शंकराचार्य जी और काशी का सम्बन्ध जो आध्यात्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक रूप से अत्यंत घनिष्ठ रहा है, वह भी अलौकिक है। आदि शंकराचार्य जी ने वेदांत दर्शन की प्रतिष्ठा की और शाश्त्रार्थ के माध्यम से अद्वैत प्रचार किया, और इसे मोक्ष भूमि की संज्ञा दी। काशी की इसी पुण्य धरती पर तुलसीदास जी ने अपनी कालजयी रचना और हिन्दुओं के पवित्र ग्रन्थ श्री रामचरित मानस की रचना की। भक्ति आंदोलन के प्रणेताओं में से एक संत कबीर दास जी का सम्बन्ध भी इसी प्राचीन नगर से है, जिन्होंने अपने दोहों और कविताओं से इस क्षेत्र को जन–जन में प्रिय बनाया।

सनातन संस्कृति की अमिट धरोहर बनारस अपनी संगीत की असीमता और वाणी के ज्ञान प्रकाश से सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। यहां के कला साधकों ने अपने कठिन परिश्रम से इस प्राचीन नगरी को संस्कृति के प्रमुख केंद्र के साथ–साथ संगीता का भी प्रमुख केंद्र बनाया।

बनारस घराने के अधिष्ठता विद्वान ***शिरोमणि पंडित राम सहाय जी*** के द्वारा स्थापित संगीत का बनारस घराना आज किसी परिचय का मोहताज़ नहीं है। आज विश्व के कोने–कोने में बनारस के मधुर संगीत की आध्यात्मिक सुगंध महक रही है। ऐसा नहीं है कि पंडित राम सहाय से पहले बनारस में संगीत का कोई अस्तित्व नहीं था। वरन यहां के कण कण में भक्ति संगीत रचा बसा है। परन्तु इसको अपनी वास्तविक पहचान दिलाने का श्रेय केवल और केवल पंडित राम सहाय जी को ही जाता है। पंडित राम सहाय जी के द्वारा दी गई इस अमूल्य धरोहर को उनके वंशजों और शिष्यों ने आगे बढ़ाया और नित नए आयामों की रचना की।

संगीत का बनारस घराना विशेषकर तबले के लिए ज्यादा प्रसिद्ध हुआ, परन्तु यह तथ्य सही नहीं लगता है, संगीत का बनारस घराना ही शायद एकमात्र घराना है, जिसको चारों पटों के संगीत की निपुणता का वरदान प्राप्त है। संगीत की सभी विधाओं गायन, वादन, और नृत्य तीनों में ही बनारस घराने ने उत्कृष्ट उपलब्धियां प्राप्त की हैं। पंडित राम सहाय जी के पिता स्वम भी एक उत्तम संगीतकार थे, और उन्हीं से पंडित राम सहाय की संगीत की प्रारंभिक शिक्षा प्रारम्भ हुई थी। पंडित राम सहाय जी के जन्म के बारे में अभी तक कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है। अनेक विद्वानों के अनेक मत हैं। परन्तु बनारस घराने को अस्तित्व में लाने का श्रेय उन्हीं को जाता है। लखनऊ के खलीफा उस्ताद मोदु खान साहब से 12 वर्षों तक तबला संगीत की शिक्षा प्राप्त की और कठिन अभ्यास किया। उसके पश्चात् 7 दिनों तक तबला वादन कर पुरे भारतवर्ष के संगीत विद्वानों से अपनी भुजा पूजन करवाया। इसे दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है कि ***उस्ताद मोदु खान*** साहब की बिरादरी को यह सब पसंद नहीं आया, और उनके भड़काने के बाद उस्ताद मोदु खान साहब ने गुरु दक्षिणा के रूप में उनसे यह वचन मांग लिया कि उनके द्वारा सिखाई गयी विद्या को वो न स्वम बजाएगें और न ही किसी को सिखाएंगे। गुरु वचन का पालन करते हुए पंडित राम सहाय जी अपनी वादन शैली में मूलभूत परिवर्तन कर एक नए घराने को जन्म दिया, और उसको बनारस घराने का नाम दिया। अपनी कुशाग्र बुद्धि और श्रेष्ठता का प्रयोग कर उन्होंने अपने पांच प्रमुख शिष्य ***पंडित भगत जी, पंडित प्रताप महाराज जी, पंडित रामशरण जी, पंडित यदुनंदन जी, और पंडित बैजनाथ जी*** को सर्वश्रेष्ठ विद्या प्रदान की। इसके अतिरिक्त पंडित जानकी सहाय जी और पंडित गौरी सहाय जी को भी तबले का प्रकांड विद्वान् बनाया, इन्हीं सब के द्वारा यह परम्परा विकसित होते हुए वर्तमान में भी विद्यमान है। पंडित राम सहाय जी और उनके शिष्यों के अथक परिश्रम से आगे चलकर अनेक महान संगीतज्ञों का उद्भव हुआ, जिन्होंने भारतीय संगीत और बनारस घराने के प्रचार, प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनमें तबले के क्षेत्र में ***पंडित भैरव सहाय, पंडित बलदेव सहाय, पंडित कण्ठे महाराज, पंडित शारदा सहाय, पंडित अनोखेलाल मिश्रा, पंडित हरी महाराज, पदम भूषण पंडित सामता प्रसाद, पदम विभूषण पंडित किशन महाराज, पंडित महापुरुष मिश्रा, पंडित छोटे लाल मिश्रा, पंडित कुमार बोस, उस्ताद सुखविंदर सिंह नामधारी, पंडित आनंद गोपाल बंदोपाध्याय, पंडित संजू सहाय, पंडित दीपक सहाय, पंडित शुभ महाराज जी*** का नाम बढ़े ही आदर सम्मान के साथ लिया जाता है।

विद्वान शिरोमणि पंडित राम सहाय जी

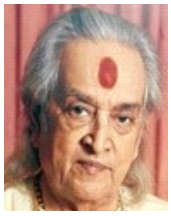

पदम् विभूषण पंडित किशन महाराज जी

भारतवर्ष की इस पुण्य, पवित्र धरा पर केवल तबले के श्रेष्ठ तबला वादकों का ही अवतरण नहीं हुआ, वरन यह पुण्य भूमि संगीत के हर एक क्षेत्र में अग्रणी रही है। शहनाई को अपनी अगल ही पहचान

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.67

दिलाने वाले ***भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खान*** साहब का सम्बन्ध भी बनारस से है। उन्होंने शहनाई की शादी, विवाह की देहलीज़ से निकालकर शास्त्रीय रूप दिया। उस्ताद बिस्मिल्लाह खान साहब की शहनाई में साक्षात् मां सरस्वती का वास था। प्रथम स्वतंत्रता दिवस की मंगल, पावन बेला पर किया गया उनका शहनाठई वादन आज भी संगीत रसिकों के मन को मंत्र मुग्ध कर देता है। ***उस्ताद बिस्मिल्लाह खान साहब*** और सितार के उस्ताद विलायत खान साहब की अनुपम जुगलबंदी श्रोताओं के हृदय पर आज भी आच्छादित है। प्रसिद्ध सितार वादक ***भारतरत्न पंडित रवि शंकर*** जी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को विश्व–पटल पर जो मान्यता प्रदान की वो अविश्वसनीय हैं, उनका सम्बन्ध भी बनारस की पुण्य धरा से रहा है। इसके अतिरिक्त ***पंडित अमरनाथ मिश्रा, पंडित कांता प्रसाद मिश्रा, पंडित विशाल मिश्रा जी, श्री नीरज मिश्रा*** ने भी सितार में अच्छी उन्नति प्राप्त की है।

भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खान

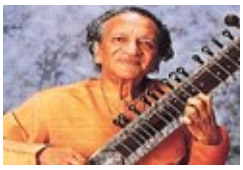

भारतरत्न पंडित रवि शंकर

एक और तंत्र वाद्य है, जिसका अनोखा सम्बन्ध बनारस से रहा है और वो वाद्य है, सारंगी। बनारस अपनी सारंगी वादन के लिए भी अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ है, और यहां अनेक प्रसिद्ध सारंगी विद्वान हुए हैं, यहां का सारंगी वादन अपनी विशिष्ठ शैली के जाना जाता है जो कि उत्तर भारत के लोक गायन से प्रभावित रहा है। बनारस के प्रमुख सारंगी वादकों में ***पंडित गोपाल मिश्रा जी, पंडित हनुमान प्रसाद मिश्रा जी, पंडित विद्या सहाय, पंडित कन्हैया लाला मिश्रा जी, पंडित संतोष मिश्रा, पंडित ध्रुव सहाय, पंडित अजय सहाय, ओम सहाय तथा विनायक सहाय जी*** है, जो सारंगी के क्षेत्र में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंचे हैं।

पंडित हनुमाद प्रसाद मिश्रा

पंडित कन्हैया लाल मिश्रा

बनारस में एक और शास्त्रीय विधा है, जिसने पुरे विश्व के आभा मण्डल पर अपना विशेष प्रभाव छोड़ा है, और वो शास्त्रीय विधा है, ***कत्थक नृत्य***। प्राचीन काल में रचित संगीत के आदि ग्रन्थ नाट्य शास्त्र जो ***आचार्य महर्षि भरत*** द्वारा लिखा गया है। वास्तव में आचार्य भरत द्वारा रचित यह एक ऐसा विलक्षण ग्रन्थ है, जिसमें संगीत की सभी विधाओं का विस्तृत वर्णन किया गया है। जिसके आधार पर हम नाट्य और संगीत का शास्त्रीय विवेचन को समझ सकते हैं। कत्थक भी एक अति

प्राचलित शास्त्रीय नृत्य है जो उत्तर भारत में अधिक लोकप्रिय है। वैसे तो भारत में नृत्य की परम्परा कोई नई नहीं है, वे भी विशेषकर बनारस का कत्थक जिसमें अनेक महान कलाकारों का प्रादुर्भाव हुआ, और उन्होंने अपने कला और नृत्य से पुरे विश्व में अपना लोहा मनवाया। बनारस के कत्थक घराने का उद्भव तो राजस्थान के जयपुर से ही माना गया है, परन्तु इसका विकास पूर्ण रूप से बनारस में ही हुआ। जयपुर घराने से पूर्व राजस्थान में ***श्यामलदास–घराना***, के नाम से एक अलग घराना विख्यात था, जो बाद में जयपुर घराने के नाम से जाना गया। कुछ समय बाद यह घराना दो भागों में विभक्त हो गया, उनमें से एक जयपुर घराना कहलाया और दूसरा ***जानकी प्रसाद घराना*** कहलाया। यह जानकी प्रसाद घराना बनारस घराने के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जानकी प्रसाद के शिष्य ***पंडित दुल्हाराम*** और ***गणेशी लाल*** बनारस आ गए और कत्थक नृत्य का प्रचार प्रसार किया इस घराने की प्रमुख विशेषता यह है कि उसमें नृत्य के साथ केवल नृत्य के बोल ही प्रयोग किये जाते हैं। गति, मुद्रा और अंग में भी यह घराना अन्य घरानों से भिन्न दिखाई देता है। ***श्री कलिका प्रसाद जी, पदम् विभूषण पंडित बिरजू महाराज जी, श्री विद्या लाल जी, विदुषी सितारा देवी, नटराज की उपाधि से सम्मानित गोपी कृष्ण जी, विदुषी शोभना नारायण*** को आज किसी भी परिचय आवश्यकता नहीं है। इन सभी का संबंध किसी न किसी रूप से बनारस से ज़रूर रहा है। वर्तमान में भी बनारस की कत्थक नृत्य परम्परा अपनी प्रमाणिकता और संस्कृति के साथ खूब फल–फूल रही है। वर्तमान में ***श्री विशाल कृष्ण जी, श्री सौरभ – गौरभ जी*** बनारस घराने प्रसिद्ध प्रतिनिधि कलाकार है, और पुरे विश्वपटल पर अपनी छाप छोड़ रहे हैं।

पदम् विभूषण पंडित बिरजू महाराज

विदुषी सितारा देवी

बनारस घराने की एक और प्रमुख संगीत विधा जिसके बिना बनारस का संगीत अधूरा है। बनारस घराना एक प्रमुख शास्त्रीय गायन का भी घराना है। जो अपनी विशिष्ट शैली और परम्परा के लिए भी जाना जाता है। अपनी विशेष शैली के लिए प्रसिद्ध बनारस का यह गायन घराना अपनी सांस्कृतिक धरोहर और परम्परा को संजोये हुए है। ध्रुपद, ख्याल, भजन, ठुमरी, होरी, कजरी, चैती, यहां तक की कुछ प्रमुख गायन शैलियां है। बनारस के शास्त्रीय गायन में, यहां के लोक गायन की छवि साफ–साफ देखी जा सकती है। बनारस के घाटों पर अनायास ही दिख जाता है कि यहां के कण–कण में संगीत रसिक और श्रोतागण आते हैं, और आत्मविभोर हो जाते हैं। ख्याल गायकी की बात हो और ***पदम भूषण पंडित राजन–साजन मिश्रा जी*** की बात न की जाये ये असंभव है। पंडित राजन–साजन मिश्रा जी ने बनारस की ख्याल शैली को जो आयाम दिया हैं, वो अविश्वसनीय है। उनका ख्याल गायन अनायास ही श्रोतागणों को अपनी ओर आकर्षित करता है, उनकी इस अमूल्य धरोहर को उनके पुत्र और शिष्य बढ़ी ही कुशलता के साथ प्रगति पथ पर ले जा रहे हैं। इसके साथ

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.67

ही ***पदम विभूषण पंडित छन्नू लाल मिश्रा जी*** का योगदान भी अमूल्य है। पंडित छन्नू लाल मिश्रा जी ने शास्त्रीय गायन के स्वरूप को कथा वाचन के साथ मिलाकर जो भक्ति रस घोला है, उसका रसापान पुरे भूखंड ने किया है। शास्त्रों का इतना गूढ़ ज्ञान बनारस के विद्वानों के अलावा कहीं और मिल पाना असंभव सा लगता है। बनारस के संगीत की बात हो और ठुमरी की चर्चा ना हो संभव नहीं है, और ठुमरी की जब भी बात होती है, तो ***ठुमरी साम्रज्ञी पदम विभूषण गिरिजा देवी*** का नाम सबसे पहले मस्तिष्क में आता है। ठुमरी को जिस भाव से उन्होंने प्रस्तुत किया उसका बखान करना बहुत ही मुश्किल है। विदुषी गिरिजा देवी जी के अतिरिक्त ***श्रीमती निर्मला देवी जी, विदुषी सिद्धेस्वरी देवी*** ने भी बनारसी ठुमरी को उच्चतम कीर्तिमान प्रदान किया हैं। इसी तरह से बनारस का लोक संगीत जैसे होरी, कजरी, चैती का अंदाज़ भी शब्दों में बता पाना संभव नहीं है। बनारस के इस रस को पीने के लिए ही देवादिदेव भगवन शिव ने इस स्थान को चुना है।

पदम् भूषण पंडित राजन, साजन मिश्रा

पदम् विभूषण विदुषी गिरिजा देवी

संदर्भ

1. बनारस घराने के प्रवर्तक पंडित राम सहाय जी की तबला–वादन परम्परा–डॉक्टर अजय कुमार।
2. संगीत विशारद–बसंत।
3. ताल परिचय–गिरीश चंद्र श्रीवास्तव।
4. पदम् भूषण पंडित सामता प्रसाद व्यक्तित्व एवं कृतत्व–डॉक्टर रेनू जोहरी।
5. कत्थक नृत्य–डॉक्टर लक्ष्मीनारायण गर्ग।
6. कत्थक नृत्य परिचय–हरीश चंद्र श्रीवास्तव।
7. स्वम अध्ययन।